संत पापा का संदेश

'विश्व–मिशन–रविवार'

''ख्रीस्त में एक व मिशन में संयुक्त''

प्रिय भाइयो व बहनो।

'विश्व–मिशन–रविवार' कलीसिया के लिए बहुत प्रिय विषय है, जिसकी स्थापना, एक सौ वर्ष पूर्व संत पापा पीयुस ग्यारहवें ने की थी। 'विश्व–मिशन–रविवार' की स्थापना के शताब्दी–समारोह के अवसर पर, इसके उद्देश्य के रूप में इस बार मैंने यह विषय चुना हैः ''ख्रीस्त में एक व मिशन में संयुक्त।'' संपूर्ण कलीसिया से मेरा अनुरोध है कि जुबली वर्ष का अनुसरण करते हुए, अपनी मिशनरी यात्रा को, पवित्र आत्मा के आनंद व उत्साह में, बनाये रखें। इस के लिए चाहिये ख्रीस्त में संयुक्त हृदय, मेल–मिलाप से संपन्न समुदाय तथा हरेक में उदारता व भरोसे के साथ सहयोग करने की इच्छा।

'ख्रीस्त में एक व मिशन में संयुक्त' होने के विषय पर चिंतन करते हुए, आइए हम स्वयं को, पवित्र आत्मा से मार्ग दर्शित व ईश–कृपा से प्रेरित होने दे, जिससे हममें मिशन कर्तव्य की आग–सा उत्साह नवीनीकृत हो और सुसमाचार–प्रचार के समर्पण में एक होकर, कलीसिया के इतिहास के 'इस नए मिशनरी युग' में हम आगे बढ सकें।(Homily, jubilee of the missionary World and of Migrants, 5 October 2025)।

''ख्रीस्त में एक'' – प्रभु में व हमारे भाई–बहनों के साथ संयुक्त मिशनरी प्रेरित।

मसीह में एक होने का रहस्य, मिशन कार्य में केंद्रीय है। अपने दुखभोग के पहले प्रभु ईसा ने पिता ईश्वर से प्रार्थना कीः 'वे सब एक हों. जैसे हे पिता, तू मुझमें है और मैं तुझमें, वैसे वे भी हम में रहें' (Jn 17:21)। ये शब्द प्रभु ईसा के सबसे गहरी इच्छा को प्रकट करने के साथ कलीसिया तथा प्रेरित समुदाय की पहचान व सत्य पर भी प्रकाश डालता है। अर्थात ऐसा संबंध जो पवित्र त्रित्व से प्रारंभ होता है तथा उसी पवित्र त्रित्व के कारण बना रहता है। यह एकता ऐसी है जो मानवों के आपसी संबंध तथा सब सृष्टि के आपसी सामंजस्य की सेवा में रहती है ।

ख्रीस्तीय होने का तात्पर्य मात्र कर्मकांड व सिद्धांतों का नहीं है। यह प्रभु से जुडा ऐसा जीवन है जिसमें हम उनके पिता के साथ के पुत्रत्व–संबंध में, पवित्र आत्मा के द्वारा भागीदार होते हैं। इसका तात्पर्य, दाख लता में जुडी डालियों की भांति प्रभु ख्रीस्त में जुड़े व बने रहना है (cf.Jn 15:4), अर्थात् पवित्र त्रित्व में लीन रहना है। यह एकता, विश्वासियों के बीच की सहभगिता को बढ़ावा देती है और सभी मिशनरी परिणामों का आधार है। यह वास्तव में संत पापा योहन पौलुस के शिक्षानुसार है और इसके बारे में उनकी शिक्षा है कि ''सहभागिता मिशन के स्रोत व परिणामों को दर्शाता है''।(Apostolic exhortation, Christifideles Laici, 32)।

इस संदर्भ में, कलीसिया का प्रथम मिशनरी कर्तव्य अपने सदस्यों के बीच में आध्यात्मिक व भ्रातृ एकता का नवीनीकरण करना और उसे बनाये रखना है। कई परिस्थितियों में, हम द्वन्द, ध्रुवीकरण,गलतफ़हमी तथा आपसी भरोसे की कमी व अभाव का सामना करते हैं। जब यह हमारे समुदाय के बीच में भी होने लगता है, हमारे साक्ष्य को कमजोर करता है। प्रभु ख्रीस्त के द्वारा अपने शिष्यों को सुपुर्द 'सुसमाचार–घोषणा' मिशन का सर्वाधिक मांग 'मेल–मिलाप' का हृदय और सहभागिता के लिए तत्परता' है। परिणामतः नीसिया महा सभा के 1700वीं वर्षगांठ के समय उभरे अवसरों का सदुपयोग करते हुए, विभिन्न कलीसियाओं के बीच के संबंधों को सुधारने के प्रयासों को तेज करना महत्वपूर्ण है।

'प्रभु में एक होना' का अंतिम महत्वपूर्ण तात्पर्य प्रभु में अपनी दृष्टि स्थिर रखने का निमंत्रण है, जिससे 'प्रभु' सच में हमारे जीवन व हमारे समुदायों का केन्द्र बन सकें और इस तरह हमारे हर शब्द, आचरण तथा आपसी संबंध का भी आधर बन, हमें यह कहने का मार्ग प्रशस्त कर सकें कि 'अब मैं नहीं, बल्कि प्रभु ख्रीस्त मझमें जीवित हैं। (Gal 2:20)। प्रभु–वचन को सदा श्रवण कर तथा संस्कारों की कृपा द्वारा, कलीसिया में जीवंत पत्थर बनना संभव होगा। आज कलीसिया को द्वितीय वत्तिकान महा सभा और उसके बाद के संत पापाओं की शिक्षाओं के, विशेष रूप से संत पापा फ्रांसिस की शिक्षा के मौलिक विषयों को अपनाने की अधिक आवश्यक्ता है। वास्तव में जैसे संत पौलुस कहते हैं कि हम अपने बारे में (घोषित) नहीं, बल्कि प्रभू ख्रीस्त की घोषणा करते हैं (2Cor 4:5)। इस कारण मैं, संत पापा पौलुस छठवें के शब्दों को पुनः रेखांकित करना चाहता हूँ : ''अगर प्रभु का नाम, शिक्षा, जीवन, प्रतिज्ञा, राज्य, और नाज़रेथ के प्रभू येसु, ईश–पुत्र के नाम के रहस्य की उदघोषणा नहीं है तो सच्चा सुसमाचार प्रचार नहीं हुआ है (EN,22)।'' इस तरह की वास्तविक सुसमाचार–घोषणा की प्रणाली, सभी मानवों तक पहुँचने हेतु, हर ख्रीस्तीय के हृदय में प्रारंभ होता है। अतः जितना अधिक प्रभु ख्रीस्त

के साथ हम जुड़ते हैं उतनी ही क्षमता–युक्त होंगे,उस मिशन को आगे ले चलने में, जिसे प्रभु ने हमें सुपुर्द किया है।

2. मिशन में संयुक्त – ताकि प्रभु ख्रीस्त में संसार विश्वास करें!

शिष्यों की एकता एक बडे मिशन के लिए है और न कि उनके बीच तक सीमित होने वाला आदर्श। ईसा इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ''...ताकि संसार यह विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है (Jn 17:21)।'' हमें स्पष्ट हो कि मेल–मिलाप युक्त, भ्रातृपूर्ण, व संयुक्त समुदाय के द्वारा ही सुसमाचार–घोषणा, अपनी अभिव्यक्ति–क्षमता को पूर्णतः प्राप्त करती है।

इस संदर्भ में, सन् 1916 ई.में. 'संत पापा–संबंधित मिशन संघ' (Pontifical Mission Union)– स्थापना की प्रेणा को, सटीक रूप से व्यक्त करने वाला धन्य पाउलो मान्ना के आदर्श वाक्य (रहा) है–''सारे विश्व (के मन परिवर्तन) हेतु संपूर्ण कलीसिया'' और इसे इस वक्त स्मरण करना उचित होगा। इस मिशन–संघ–स्थापना के 110वीं वर्षगांठ पर, इसके प्रति अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करते हुए, मिशन उत्साह से भरे पुरोहितों, अभिषिक्त व्यक्तियों व लोकधर्मियों के प्रशिक्षण व निर्माण द्वारा सुसमाचार–प्रचार के प्रयासों को संयुक्त व प्रोत्साहित करने के प्रति इनके समर्पण को आशीर्वाद देता हूँ। वास्तव में किसी भी बप्तिस्मा प्राप्त व्यक्ति को इस मिशन से न ही छूट है और न ही इसके प्रति कोई उदासीन रह सकता है। हरेक, अपनी अपनी बुलाहट तथा जीवन की परिस्थिति के अनुसार, प्रभु ख्रीस्त द्वारा सुपुर्द इस महान दायित्व के निर्वाह में भागिदार होता/होती है। जैसे संत पापा फ्रांसिस ने बार बार स्मरण दिलाया है कि 'सुसमाचार–घोषणा' ऐसा कार्य है जो सदा सामंजस्यपूर्ण, सामुदायिक, सम्मिलित व सह–यात्रात्मक है।

इसलिए 'मिशन में संयुक्तता' का तात्पर्य, सहभागिता की आध्यात्मिकता तथा मिशन सहयोग को सरक्षित रखना और पोषित करना है। इस विचार के दैनिक पालन से, अपने सब भाई–बहनों को विश्वास की दृष्टि से देखने की मनोभावना, ईश–कृपा, हमें धीरे धीरे प्रदान करती व सिखाती है। हम धीरे धीरे, हरेक व्यक्ति में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित भलाई को, प्रसन्नता के साथ पहचानने, विभिन्नता को खजाने–सदृश स्वीकारने, एक–दूसरे के दुःख संकट व भार को वहन करने और सदा ईश्वर की ओर (ऊपर) से आने वाली एकता को प्राथमिकता के साथ खोजने के लिए तैयार होने तथा सीखने लगते हैं। वास्तव में, हम सब सहभागी हैं, एक ही मिशन के, एक ही प्रभु के, एक ही विश्वास व बपतिस्मा के, और एक ही ईश्वर के जो सब के पिता हैं, सबमें, सबके द्वारा

व सबके ऊपर हैं(Eph 4:5-6)। यह आध्यात्मिकता हमारे मिशनरी–शिष्यत्व की दैनिक अभिव्यक्ति का निर्माण करती है। यह, कलीसिया के सुसमाचार–प्रचार' मिशन के सार्वभौमिक आयाम को पुनः पहचानने व प्राप्त करने की मदद करती है और इस तरह यह, दलबंदी– जैसे कि मैं पौलुस का हूँ और मैं अपोलो का हूँ आदि की मानसिकता के निर्माण को तथा सहयोग भाव की कमी को दूर करने में, हमारी मदद करती है।

हम जानते हैं कि मिशनरी एकता का तात्पर्य एकरूपता नहीं है बल्कि विभिन्न वरदानों का एक ही उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक साथ आना व होना है; ख्रीस्त के प्रेम को प्रकट करना और हरेक को प्रभु येसु से मिलवाना ही इसका एक मात्र उद्देश्य है। जब स्थानीय समुदाय एक दूसरे का सहयोग करते हैं और जब सभ्यतागत, आध्यात्मिक पूजा–पाठ–पद्धति संबंधित भिन्नतायें उसी विश्वास में सामंजस्यपूर्ण ढ़ंग से अभिव्यक्त होती हैं तब सुसमाचार–प्रचार मिशन संपन्न होता है। कलीसिया के सब संस्थाओं को प्रोत्साहित करता हूँ कि वे अपनी कलीसियायी–मिशनरी–सहभागिता के भाव को सुदृढ़ करें तथा मिशन में व मिशन हेतु सहभगिता के ठोस व सृजनात्मक तौर–तरीक़ों को बढ़ावा दें व बनाये रखें।

इस संदर्भ में, पोन्तिफ़िकल मिशन संस्थाओं (Pontifical Mission Societies) को, मिशन–सहभगिता हेतु उनकी सेवा के लिए, धन्यवाद देना चाहता हूँ , जिसे मैंने स्वयं पेरू में मेरी अपनी सेवा–काल के दौरान अनुभव किया है। विश्वास की घोषणा व प्रसार संस्था (Propagation of the Faith), पवित्र बालपन संस्था (Holy Childhood), संत पेत्रुस प्रेरितिक सभा (St.Peter the Apostle), आदि संस्थाएँ, सभी स्तर की उम्र के लोगों में मिशन जागरूकता का निर्माण कर, पोषित करती हैं और इस तरह प्रार्थना व परोपकार के द्वारा संसार भर में लोगों को जोड़ने का काम करती हैं। यहाँ, विश्वास की घोषणा व प्रसार–संस्था (Propagation of the Faith) के संस्थापक धन्य पौलीन मारिये जारिकोट (Bl.Pauline Marie Jaricot) को याद करना उचित होगा जिन्होंने दो सौ वर्ष पूर्व जीवित रोज़री (living Rosary) की स्थापना की थी। आज भी यह, विश्व भर के अधिकांश विश्वासियों को आध्यात्मिक व मिशनरी आवश्यक्ता हेतु प्रार्थना करने के लिए एक साथ लाने की परंपरा को बनाये रखने में सफ़ल तहा है। यहाँ यह स्मरण भी उचित होगा कि विश्वास की घोषणा व प्रसार संस्था (Propagation of the Faith), के सुझाव के कारण ही संत पापा पीयुस ग्यारहवें ने सन् 1926 ई. में विश्व मिशन की स्थापना की थी। इस दिन के वार्षिक अनुदान को, एकत्रित कर, संत पापा के नाम पर, कलीसिया के विभिन्न मिशन आवश्यक्ताओं के लिए, यह संस्था जरूरत के अनुसार वितरण करती है। उपरोक्त चार संस्थाएँ, एक साथ तथा हरेक संस्था अपनी अपनी विशिष्ट योगदान से आज भी

कलीसिया की सेवा करती हैं। वे एकता तथा कलीसियायी मिशनरी सहभागिता के जीवित चिन्ह हैं। मैं हरेक को इनके साथ मिलकर कृतज्ञता के भाव से काम करने स्वागत करता हूँ।

3. प्रेम करने का मिशन : ईश–प्रेम को जीना, बाँटना तथा उद्घोषित करना।

यदि एकता मिशन की शर्त है तो प्रेम इसका सार है। यह सुसमाचार जिसे घोषित करने के लिए हम संसार में भेजे जाते हैं काल्पनिक आदर्श नही है; बल्कि पिता ईश्वर के विश्वसनीय प्रेम का शुभ–संदेश है, जो प्रभु ईसा मसीह के मुख व जीवन का शरीर बना है। प्रेरितों व कलीसिया का मिशन, खुल मिलाकर प्रभु ख्रीस्त के मिशन को पवित्र आत्मा में बनाये रखना और आगे बढ़ाना है। यह ऐसा मिशन है जो प्रेम में जनम लेकर, प्रेम में जीकर और प्रेम की ओर ले चलता है। वास्तव में अपने दुःख–भोग के पूर्व की महान प्रार्थना में, प्रभु येसु ने, अपने शिष्यों के बीच एकता का आह्वान किया। तत्पश्चात उन्होंने उस महान प्रार्थना का समापन इन शब्दों से किया : ''ताकि जिस प्रेम से तूने मुझे प्रेम किया है वही प्रेम उनमें रहे और मैं उन में (Jn 17:26)।'' प्रभु ख्रीस्त के प्रेम से आविष्ट व प्रेरित होकर प्रेरितगण, उसी ख्रीस्त के लिए सुसमाचार घोषित करने, बाहर निकल पडे (cf. 2 Cor 5:14)। इसी तरह, शताब्दियों से, ख्रीस्त के अनुयायियों –शहीद, धर्मगवाह तथा मिशनरियों – का झुण्ड ने अपने जीवन–त्याग से इस प्रेम को संसार के सामने प्रकट किया है। इस तरह पवित्र आत्मा के मार्ग दर्शन व प्रेरणा से, आत्मा के प्रेम से ओत–प्रोत यह सुसमाचार–प्रचार का मिशन, अंतिम समय तक चलता रहेगा।

आज मैं उन मिशनरियों को विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ जो विश्व भर के गैर ख्रीस्तीय क्षेत्रों में कार्यरत हैं। संत फ्रांसिस ज़ेवियर के समान वे अपने स्वराष्ट्र, अपने परिजन, परिवार और हर प्रकार की सुरक्षा–भाव त्यागकर, सुसमाचार – सुनाने तथा प्रभु ख्रीस्त व उनके प्रेम को पहुँचाने हेतु, दूर दूर के उन देशों में गये जो अक्सर गरीबी, संघर्ष–ग्रस्त, अलग प्रकार की सभ्यता आदि चुनौतियों से भरे थे। विरोध व मानवीय कमजोरी और सीमाओं के बावजूद, वे अपने को खुशी के साथ त्याग करने में लगे हैं क्योंकि उन्हें यह पता है कि प्रभु ख्रीस्त व उनके सुसमाचार ही उच्चतम खजाने व उपहार हैं जिन्हें हम दे सकते हैं। इन बाधाओं के बीच अंत तक बने रहकर, वे यह प्रकट करते हैं कि ईश–प्रेम सब बाधाओं को पार कर सकता है। संसार को ऐसे साहसी ख्रीस्त के साक्षियों की आवश्यक्ता आज भी है और कलीसियायी समुदाय आज भी मिशनरी बुलाहटों की आवश्यक्ता में हैं। हमें चाहिए कि हम इन्हें अपने हृदय के निकट रखें और उनके लिए सदा पिता ईश्वर से प्रार्थना करते रहें। प्रभु हमें ऐसे जवानों व वयस्क लोगों का उपहार

प्रदान करते रहें जो प्रभु ख्रीस्त के अनुसरण हेतु, संसार के अंत तक सुसमाचार–प्रचार के लिए अपना सब कुछ त्यागने तैयार हो सकें।

पुरूष और महिला मिशनरियों प्रति प्रशंसा से भरे हुए दिल से, संपूर्ण कलीसिया से मैं अनुरोध करता हूँ कि सभी विश्वासीगण इन मिशनरियों के सुसमाचार–प्रचार के मिशन में जुडें; ख्रीस्त में अपने जीवन के साक्ष्य के द्वारा, प्रर्थना के माध्यम से, और मिशन हेतु अपने अपने दान द्वारा, इनके साथ सम्मिलित हो जायें। जैसे असीसी के संत फ्रांसिस ने कहा : ''प्रेम को प्रेम नहीं मिलता या प्रेम से प्रेम नही किया जाता''। उनके स्वर्गवास के 800 वर्ष के बाद हम उनकी ओर विशेष रूप से देखते हैं। प्रभु के प्रेम में जीने की उनकी तीव्र इच्छा से हम भी प्रेरित हो जायें और इसे निकट व दूर रहने वाले भाई–बहन तक पहुँचायें क्योंकि जैसे उन्होंने कहा ''हमें अधिक प्यार करने वाला इस प्रेम को, अधिक से अधिक प्यार किया जाना है।''(St.Bonaventure, The Life of Saint Francis, Chap.ix,1; Fonti Francescane, 1161). बालक येसु के संत तेरेसा के जीवन से भी हम प्रेरणा प्राप्त करें, जिन्होंने यह घोषणा की कि मृत्यु के बाद भी वह अपने मिशन को ज़ारी रखेंगीः ''अब मैं पृथ्वी पर जो कर रही हूँ उसे स्वर्ग पर भी करना चाहूँगीः येसु को प्यार करना तथा उन्हें दूसरों से प्यार कराना'' या ''येसु से प्रेम करना और उन्हें प्रिय बनाना'' (Letter 220 to L'Abbe Belliere, 24 Feb 1897)।

इन साक्षियों से प्रेरित होकर, आइये हम सब, हमें प्राप्त बुलाहट और वरदान के अनुसार, सुसमचार–घोषणा के महान मिशन में योगदान देने हेतु स्वयं को समर्पित करें, जो कि हमेशा प्यार का कार्य है। आपकी प्रार्थना व व्यहारिक सहयोग, विश्व–मिशन–दिवस के इस विशिष्ट अवसर पर, ईश–प्रेम के सुसमाचार को हरेक तक, विशेष्कर निर्धन, दरिद्र व अधिक जरूरतमंदों तक पहुँचाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा। हर उपहार, भले बहुत छोटा ही क्यों न हो, मिशनरी सहभागिता में अर्थपूर्ण आवश्य होता है। विश्व–भर में कार्यरत मिशनरियों की सेवा में जो भी सहायता आप मुझे प्रदान करेंगे, उस के लिए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता को पुनः दुहराना चाहता हूँ। (Video Message for World Mission Day 2025, 19 October 2025)। इस साधारण प्रार्थना के साथ, आध्यात्मिक सहभागिता को बनाये रखने हेतु मैं अपना आशीर्वाद देता हूँः

''हे पवित्र पिता, हमें ख्रीस्त के प्रेम की नींव में एक बना जो हमें जोड़ता व नवीन करता है। ऐसा कर कि कलीसिया के सभी सदस्य, पवित्र आत्मा के प्रति आज्ञाकारी व संवेदनशील बने रहने में, साहसपूर्वक सुसमाचार के साक्षी बनने में, तेरे विश्वसनीय प्रेम

को सब जीवों के लिए रोज अपने जीवन में धारण कर, घोषित करने के मिशन में एक हों।

सभी मिशनरी पुरूष व महिलाओं को आशीर्वादित कर, उनके प्रयासों में उनकी समर्थन कर, और आशा में उनकी देखरेख कर।

हे माँ मरियम, मिशन की रानी। पृथ्वी के हर कोने में हो रहे सुसमाचार–प्रचार कार्य में हमारे साथ चलने की कृपा कर। हमें शांति का दूत बना दे और ऐसा कर कि सारा विश्व, ख्रीस्त में उस ज्योति को पहचानें जो सब को मुक्ति प्रदान करती है। आमेन

(From Vatican, 5 January 2026, Third Sunday in Ordinary Time, Feast of the Conversion of Saint Paul)